अध्याय - पहला

प्रास्ताविक

१.१ विषय प्रवेश।

१.२ शोधकार्य की आवश्यकता।

१.३ शोधकार्य समस्या विधान।

१.४ समस्या विधान में प्रयुक्त पदों की परिभाषाएँ।

१.५ शोधकार्य का महत्व।

१.६ शोधकार्य के उद्देश्य।

१.७ शोधकार्य की परिकल्पना।

१.८ शोधकार्य की मर्यादाएँ।

१.९ अध्याय योजना।

अध्याय पहला

प्रास्ताविक

१.१ विषय प्रवेश -

औपचारिक शिक्षा पध्दति में पाठयपुस्तक एक अनिवार्य शिक्षा साधन माना जाता है। शिक्षा को सुबोध बनाने के लिए पाठयपुस्तक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है। वर्तमान शिक्षा पध्दति में पाठयपुस्तक की आवश्यकता बढ़ती ही जा रही है। शिक्षा पध्दति के जो कुछ भी राष्ट्रीय सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा सामान्य उद्देश्य होते हैं, उन उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए पाठयपुस्तक होना ही चाहिए। छात्रों के मनोरंजन के लिए तथा स्वाध्याय के लिए पाठयपुस्तक एक बहुतही सशक्त साधन है। पाठयपुस्तक के बिना शिक्षा पध्दति का कार्य अधुरा ही रहेगा।

आज की शिक्षा पध्दति में संगनक एक आधुनिक शिक्षा साधन माना जाता है। हो सके तो संगनक पाठयपुस्तक की जगह ले सकता है, लेकिन हमारे खेती प्रधान भारत देश के लिए यह असंभव है। आज के विज्ञानयुग में संगणक और उपग्रहों के माध्यम से हमें दुनिया की कौनसी भी जानकारी कम समय में प्राप्त हो सकती है। फिर भी शिक्षा क्षेत्र में कक्षा अध्ययन-अध्यापन में पाठयपुस्तक का महत्व अलग ही है।

कार्टर व्ही. गुडके (१९४५) अनुसार -

> "A book dealing with a definite subject to studies systematically arranged, intended for use at a specified level of intesion and used as a principal source of study material for a given course."
>
> "पाठयक्रम के प्रमुख साधन के रुप में एक निश्चित शैक्षणिक स्तर पर उपयोग में लाने के हेतू से निश्चित-अध्येय विषय पर व्यवस्थित अनुक्रम से लिखी हुई पुस्तक पाठयपुस्तक है।"

पाठयपुस्तक आधुनिक शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण साधन है। न केवल छात्रों के लिए ही अपितु अध्यापकों के लिए भी और अभिभावक के लिए भी पाठयपुस्तकों का विशेष महत्व है। विविध विषयों का ज्ञान छात्रों को देने के लिए जो पाठयक्रम निर्धारित किया जाता है उसे कार्यान्वित करने के लिए पाठयपुस्तक - एक प्रमुख साधन है। पाठयपुस्तक की महत्ता ब. बि. पंडित इन्होने निम्न मुद्दों से स्पष्ट की है -

१. पाठयपुस्तक से ज्ञानोपार्जन में सहायता मिलती है।

२. इसके प्रयोग से पाठ को पढ़ने और पढ़ाने में सहायता मिलती है।

३. पठित पाठ को पुनः स्मरण करने-कराने में पाठयपुस्तक सबल साधन है।

४. छात्रों को गृहकार्य देने में इससे सुविधा होती है।

५. संपूर्ण कक्षा को एक साथ- पढ़ने में पुस्तके बड़ी उपयोगी होती हैं। पुस्तक की सहायता से एक अध्यापक अनेक छात्रों को एक साथ सरलता से पढ़ा सकता है।

६. पाठयपुस्तकें भाषा का विशुध्द आदर्श छात्रों के सामने रखकर भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होती है। इनकी सहायता से छात्र भाषा के विविध अंगों का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

१.२ शोधकार्य की आवश्यकता -

शिक्षा पध्दती में अध्ययन-अध्यापन पध्दति का काम करने के लिए पाठयपुस्तक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। पाठयपुस्तक के बिना शिक्षा का काम अधुरा ही रहेगा। प्रस्तुत शोधकार्य पाठयपुस्तक की अनिवार्यता ध्यान में लेते हुए किया गया है। इस शोधकार्य के द्वारा पाँचवी कक्षा का हिन्दी सुलभभारती यह पाठयपुस्तक मुद्रण तंत्रज्ञान और पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के निकषों पर कहाँ तक सफल रहा है। यह देखने का प्रयास किया गया है। क्या पाँचवी कक्षा का हिन्दी पाठयपुस्तक कोबायशीजी ने बताए हुए मुद्रण तंत्रज्ञान के बारह सोपानों के निकषों

पर उतर जाता है? तथा पाठयपुस्तक निर्माण प्रक्रिया में महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडल, कौनसी भुमिका निभाता है?

प्रस्तुत शोधकार्य में पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के निकषों के अनुसार भी पाँचवी कक्षा के हिन्दी पाठयपुस्तक का परीक्षण किया गया है। पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के, पाठयपुस्तक का बाह्यांग, मुद्रित अनुस्थापन की पहचान, सामान्य उद्दिपक, गणितीय क्रिया, वाचक के लक्षण, वाचन फल इ. अंगों द्वारा पाठयपुस्तक का परीक्षण किया गया है। इन अंगों के दृष्टि से परीक्षण करने से पाठयपुस्तक के सभी घटकों के अनुसार पाठयपुस्तक कैसा होना चाहिए इस बात का पता चलेगा। तथा पाठयपुस्तक निर्मिती मंडल के तज्ञ, अध्यापक, अभिभावक और विद्यार्थी सही रुप से परिचित होंगे।

Good C.V. (1945) के अनुसार -

Research is the challenge that removes the threat of stagnation of decay from all society.

१.३ समस्या विधान -

प्रस्तुत शोधकार्य का समस्या विधान निम्नानुसार है -

"पाँचवी कक्षा के पाठयपुस्तक, हिन्दी सुलभभारती का मुद्रण तंत्रज्ञान एवं पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार परीक्षण।"

१.४ पदों की परिभाषाएँ -

पाँचवी कक्षा -

महाराष्ट्र राज्य के मराठी- माध्यमवाली पाठशालाओं में पढ़नेवाले १० + वर्षकी आयु के विद्यार्थी।

पाठयपुस्तक -

"Basic book used in a particular course of study."

अर्थात - ''विशिष्ट अभ्यासक्रम के लिए निर्धारित मुलभूत पुस्तक''

त्रिभाषा सूत्र के अनुसार अहिंदी भाषी क्षेत्रमें हिन्दी का अध्ययन द्वितीय भाषा के रुप में होता है। हिन्दी भाषा के पाठयपुस्तक का विचार करते समय यहाँ द्वितीय भाषा के रुप में - महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती और अभ्यासक्रम संशोधन मंडल द्वारा कक्षा ५ वी के लिए निर्धारित ''हिन्दी सुलभभारती'' यह पाठयपुस्तक।

मुद्रण तंत्रज्ञान -

पाठयपुस्तक के निर्माण की वह अवस्था जिस में वाचक को पाठयपुस्तक की प्राप्ती होने के पूर्व, पाठयपुस्तक जिस प्रक्रिया से गुज़रता है, वह प्रक्रिया मुद्रण तंत्रज्ञान है।

पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान -

थॉमस और कोबायशी इन्होंने पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के छः तत्व बताए हैं।

१. पाठयपुस्तक का बाह्यांग।

२. मुद्रित अनुस्थापन।

३. सामान्य चेतक।

४. गणितीय क्रिया।

५. वाचक के लक्षण।

६. वाचन फल।

उपर्युक्त छः तत्वों के आधार पर पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के दृष्टि से पाठयपुस्तक का पीरक्षण करना है।

परीक्षण -

पाठयपुस्तक 'सुलभभारती' को मुद्रण तंत्रज्ञान एवं पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के सिध्दान्तों के अनुसार परखना। ·

१.५ शोधकार्य का महत्व -

हिन्दी हमारे भारत देश की राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा राष्ट्र का दर्पण मानी जाती है। अतः राष्ट्रभाषा का अध्ययन करना हर एक भारतीय नागरिक का प्रथम कर्तव्य है। महाराष्ट्र में यह भाषा द्वितीय भाषा के रुप में पढ़ाई जाती है। "हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा" यह पाठयपुस्तक महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती और अभ्यासक्रम अनुसंधान मंडल, पुणे द्वारा सन २६ जनवरी, १९९२ में निर्माण किया गया है। प्रस्तुत पाठयपुस्तक अहिन्दी भाषा छात्रों के लिए निर्माण की हुई पहली पाठयपुस्तिका है। हमारा भारत देश १९४७ में स्वतंत्र हुआ। अपितु गत ५० वर्ष में छात्रों के श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन इस क्षेत्र में उतना विकास नहीं हुआ, जितना होना चाहिए था। इसका कारण यह हो सकता है कि या तो आज के शिक्षा पध्दति में पाठयपुस्तक का दर्जा समाधानकारक नहीं है,या तो अध्ययन-अध्यापन कार्य ठिक तरह से ना हो। इसलिए इस क्षेत्र में शोधकार्य होना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत पाठयपुस्तक तज्ञ शिक्षाशास्त्रीयों के द्वारा निर्माण किया गया है। अपितु भाषा के विकास में पाठयपुस्तक यह एक सशक्त साधन माना जाता है। पाठयपुस्तक से छात्रों के मन पर होनेवाला प्रभाव स्थायी होता है। इसलिए पाठयपुस्तक मुद्रण तंत्रज्ञान और पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान गुणवत्तापूर्ण होना आवश्यक है। हिन्दी पाठयपुस्तक का मुद्रण तंत्रज्ञान और पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार अभितक परीक्षण नहीं हुआ है। इसलिए प्रस्तुत शोधकार्य महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती और अभ्यासक्रम अनुसंधान मंडल, अध्यापक और छात्रों के दृष्टि से महत्वपूर्ण लगता है।

शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों में ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक विकास करना है। इन उद्देश्यों की पूर्ति करने केलिए पाठयपुस्तक निर्माण होता है। निर्दोष पाठयपुस्तक की

सहायता से अध्ययन-अध्यापन में सुसूत्रता रहती है, और एक निश्चित राह मिलती है। जिस कक्षा के लिए पाठयपुस्तक नियुक्त किया गया हो उस कक्षा के छात्रों के आयु के अनुसार मानसिक, भावनिक, शारीरिक तथा बौध्दिक पक्वता इन बातों के अनुसार भाषा का होना अनिवार्य है। पाठयपुस्तक में सभी संकल्पनाओं का स्पष्ट उल्लेख, उचित विवरण, अभ्यास विषय से संबंधित तर्कशुध्द एवं सुसंबंध रचना इन बातों का पाठयपुस्तक में होना अनिवार्य है।

प्रस्तुत शोधप्रबंध में कक्षा पाँचवी हिन्दी पाठयपुस्तक का परीक्षण करते समय हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन करनेवाले अध्यापक तथा छात्रों का ध्यान रखा है। अध्यापक और छात्रों को महसूस होनेवाली समस्याएँ, पाठयपुस्तक में रही कमियाँ, अध्यापक और छात्रों से आए हुए सुझाव आदि बातों का विचार प्रस्तुत शोध कार्य में किया हे। इस शोधकार्य में वास्तविक समस्याओं का आधार होने के कारण इसे अनन्यसाधारण महत्व मिलेगा यही हमारी अभिलाषा है।

१.६ शोध कार्य के उद्देश्य -

प्रस्तुत शोध प्रबंध परीक्षण के उद्देश्य निम्नानुसार है -

१. हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा के पाठयपुस्तक का मुद्रणतंत्रेज्ञान (Print Technology) के अनुसार जानकारी लेना।

२. 'हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा' पाठयपुस्तक के बाह्यांग (Physical aspects) का परीक्षण करना।

३. 'हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा' के मुद्रित अनुस्थापन (Print Orientation) का परीक्षण करना।

४. 'हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा' के सामान्य उद्दिपक का (Nominal stimulus) परीक्षण करना।

५. 'हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा' के गणितीय क्रिया (Mathemaginic behaviour) का परीक्षण करना।

६. 'हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा' के वाचक के लक्षणों का परीक्षण करना।

७. 'हिन्दी सुलभभारती कक्षा' के वाचन फल का (Outcomes of Reading) जाँच कार्य करना।

८. 'हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा' का मुद्रण तंत्रज्ञान और पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के सिध्दान्तो के आधार पर मूल्यांकन करना।

१.७ शोधकार्य की परिकल्पना (Hypothesis) -

१. हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा पाठयपुस्तक के निर्माण में मुद्रण तंत्रज्ञान के कुछ सिध्दान्तों को अपनाया गया है।

२.१. पाँचवी कक्षा के हिन्दी पाठयपुस्तक का बाह्यांग, पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए बाह्यांग के निकषों के अनुसार है।

२.२. पाँचवी कक्षा के हिन्दी पाठयपुस्तक का मुद्रित अनुस्थापन पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए मुद्रित अनुस्थापन के निकषों के अनुसार है।

२.३. पाँचवी कक्षा के हिन्दी पाठयपुस्तक का सामान्य उद्दिपक पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए सामान्य उद्दिपक के निकषों के अनुसार है।

२.४. पाँचवी कक्षा के हिन्दी पाठयपुस्तक में गणितीय क्रिया पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए गणितीय क्रियाओं के निकषों के अनुसार है।

२.५. पाँचवी कक्षा के हिन्दी पाठयपुस्तक के बारे में वाचक के लक्षण पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए वाचक के लक्षणों के निकषानुसार है।

२.६. पाँचवी कक्षा के हिन्दी पाठयपुस्तक का वाचन फल पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए वाचन फल के निकषों के अनुसार है।

१.८ शोधकार्य की मर्यादाएँ -

प्रस्तुत शोधकार्य पन्हाला तहसील के क्षेत्र तक सीमित हैं। इस शोधकार्य में पन्हाला के क्षेत्र में मराठी माध्यमवाले अनुदान प्राप्त कुल २८ हाईस्कूल हैं। इन हाईस्कूलों में से ३२ प्रतिशत हाईस्कूल शोधकार्य के लिए सुगम यादच्छिक पध्दति अपनाकर चुने गए हैं। चुने गए हाईस्कूल निम्नांकित हैं।

१. कोडोली विद्यालय, कोडोली।

२. हॉवर्ड मेमोरियल, कोडोली।

३. सातवे हाईस्कूल, सातवे।

४. देवाळे हाईस्कूल, देवाळे।

५. जाखले हाईस्कूल, जाखले।

६. मोहरे हाईस्कूल, मोहरे।

७. न्यू इंग्लिश स्कूल, माले।

८. श्री वारणामाई हाईस्कूल, काखे।

९. संजीवनी पब्लीक स्कूल, पन्हाला।

२. इस परीक्षण में केवल महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती और अभ्यासक्रम मंडल, पुणे, द्वारा निर्धारित हिन्दी पाठयपुस्तक, "हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा" का परीक्षण है। इस में किसी भी अन्य कक्षा के पाठयपुस्तक का समावेश नहीं है।

३. यह परीक्षण पन्हाला तहसिल में स्थापित केवल जहाँ भाषा द्वितीय भाषा के रुप में पढ़ाई जाती है, ऐसी हाईस्कूलों के पाँचवी कक्षा के हिन्दी सुलभभारती पाठयपुस्तक का है।

४. यह परीक्षण केवल मुद्रण तंत्रज्ञान और पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा के पाठयपुस्तक का है।

१.९ अध्याय योजना

प्रस्तुत अनुसंधान के लिए पध्दति, साधनों द्वारा संकलित जानकारी, उसका वर्गीकरण, विश्लेषण, निष्कर्ष तथा सूझाव इनका प्रस्तुतीकरण निम्न अध्यायों में किया है।

अध्याय-१ प्रास्ताविक -

इस अध्याय में यह समस्या केसे निर्माण हुई इसके बारे में छानबिन करके उस समस्या का शब्दांकन किया गया है। समस्या का महत्व, आवश्यकता, उद्देश्य, मर्यादाएँ और किस पध्दति का प्रयोग किया गया है, इस का निर्देश किया गया है।

अध्याय २ : मुद्रण तंत्रज्ञान एवं पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान -

प्रास्तविक, मुद्रण तंत्रज्ञान का इतिहास, उसके सिध्दान्त, पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान, का अर्थ, उसके सिध्दान्त, स्वरुप आदि से संबंधित तात्विक जानकारी इस अध्याय में सम्मिलित की है।

अध्याय ३ : संशोधन समस्या से संबंधित साहित्य का समालोचन -

संशोधन विषय के संदर्भ में इसी संदर्भ में पहले किए गए शोध कार्य का विचार इस अध्याय में किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में समालोचन की उपयुक्तता तथा मर्यादाओं का समावेश किया गया है। इस शोधकार्य से पूर्व हुआ शोधकार्य और प्रस्तुत शोधकार्य में अंतर एवं उसका महत्व विशद किया है।

अध्याय ४ - शोध कार्य पध्दति -

अध्ययन विषय का अभिकल्प, प्रयुक्त पध्दति का वर्णन, शोध कार्य सामग्री स्वरुप, शोधकार्य के लिए प्रयुक्त साधन, जनसंख्या और न्यादर्शचयन, सामग्री विश्लेषण और अर्थान्वेषण इ. बातों की जानकारी अध्याय में दी गई है।

अध्याय ५ - संशोधन सामग्री विश्लेषण और अर्थनिर्वचन -

प्रस्तुत अध्याय में साक्षात्कार के द्वारा संकलित हुई जानकारी, प्रश्नावली के द्वारा संकलित हुई जानकारी का वर्गीकरण और विश्लेषण करके उसका अन्वयार्थ लगाया गया है।

अध्यास ६ - निष्कर्ष एवं सूझाव -

संशोधन सामग्री के आधार पर समस्या की वर्तमान स्थिती क्या है यह निश्चित की गई है। उसी के आधार पर निष्कर्ष निकाले गए हैं। निष्कर्ष के आधार पर सूझाव दिए गये हैं। साथ ही संशोधन विषय के संदर्भ में और संशोधन हो, इसके लिए उपयुक्त समस्या की ओर भी निर्देश किया गया है।

अध्याय पहला

संदर्भ सूची

१. Good C.V. Dictionary of Education, MacGraw Hill Book Co. 1945, p.423

२. देशपांडे वि.भा., तावरे स्नेहल, (संपा.) मराठी भाषा आणि साहित्य, पुणे : मेहता पब्लिकेशन हाउस, प्रथमावृत्ती, १९९० लेख, सराफ रा. सो., महाराष्ट्रातील शालेय स्तरावरील पाठयपुस्तके पृष्ठ ११४-११५ (अनुवाद).

३. पंडित, बा.वि. हिंन्दी अध्यापन, पुणे : नूतन प्रकाशन, प्रथमावृत्ती, १९९० पृष्ठ १३२.

४. G. Terr. Page & Thomas J.B. with Marshall A.R., International Dictionary of Education, London : The English Language Book Society and Kogan. Page, 1979.

५. Thomas R.M. & Kobayashi V.N., Educational Technology It's Creation - Development & Cross Cultural Transfer Volume 4, New York : Pergaman Press, 1987, page 191-92.

६. अकोळकर, ग.वि., पाटणकर ना.वि., मराठीचे अध्यापन, पुणे : व्हीनस प्रकाशन, सातवी आवृत्ती, १९७० पृष्ठ १६.